गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में पागल सी हो रही थी। उनको ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके जीवन की पूरी कमाई किसी ने अचानक खो दी हो। गोपियों का जीवन ही श्रीकृष्ण थे! उन्होंने मानो अपना जीवन ही खो दिया। वे विरह समाधी में पहुँच गयी और श्रीकृष्ण के याद करते करते खुद को ही शश्रीकृष्ण मानने लगी। श्रीकृष्ण की लीलाओं को सोच कर वे खुद वैसी लीलाएँ करने लगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक श्रीकृष्ण और अन्य पुतना बन गयी और पूतना वध की लीला करने लगी। श्रीकृष्ण बन गयी वो कहने लगी मैं यहां सभी राक्षसों को मारने के लिए यहां हूं। एक ने बांसुरी बजाना शुरू किया और उसकी तारिफ करने लगी! इस तरह उन्होंने दिव्य नशे में श्रीकृष्ण की नकल करी। ये एक्टिंग नही बल्कि समाधि की अवस्था है जहा जीव अपने को भगवान मानने लगता है।

कुछ होश में आयी तो वे अपने खोए हुए खजाने की यानी श्रीकृष्ण की खोज करने लगी। वे पेड़ों, फूलों, पक्षियों और यहां तक कि धूलिकणों को भी श्रीकृष्ण का पता पूछने लगी। वे श्रीकृष्ण की तलाश में जंगल में गयी, जहां उनको श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह और साथ में एक अन्य गोपी (राधा) के चरण चिन्ह दिखाई पड़े। तो सभी कहने लगी, 'यह गोपी सबसे भाग्यशाली है जो श्रीकृष्ण हमें छोड़ कर इसको अपने साथ ले गये। इसने बडा भारी तप किया होगा। थोडी आगे गयी तो देखा कि केवल एक ही व्यक्ति के चरण चिन्ह थे। ते आपस में बात करने लगी, 'अब इस जगह को देखो! केवल एक व्यक्ति के चरण चिन्ह हैं! ऐसा लगता है कि श्रीकृष्ण ने उसे कंधे पर ले लिया है और आगे चला गये है। उस गोपी के भाग्य का वर्णन कौन कर सकता है?'

कुछ और आगे जाने के बाद गोपियों ने सोचा कि यदि हम आगे तो श्रीकृष्ण इस रात के अंधेरे में घने जंगल में और आगे जायेंगे तो हमारे प्रियतम को और कष्ट होगा। इसलिए वे सब लौटी तो

रास्ते में उन्होंने पाया कि वो गोपी(राधा) जो श्रीकृष्ण के साथ गयी थी वो बेहोश पड़ी थी! उन्होंने उसके चेहरे पर कुछ पानी छिड़क दिया। तब राधा होश में आयी और कहा, "जब श्रीकृष्ण ने मुझे उनके साथ ले गये तो मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। एक जगह पर मैंने कहा, 'ओ! श्रीकृष्ण मैं घूमने से बहुत थक गयी हूं और मुझ से और आगे नहीं चला जायेगा! मुझे कंधों पर बिठाकर आप मुझे जहा लेना चाहते हो वहा ले चलो। ' यह सुनकर श्रीकृष्ण मुझे कंधे पर बिठाने के लिए खुद बैठ गये। जैसे ही मैं कंधों पर बैठने लगी तो श्रीकृष्ण उस जगह से गायब हो गये! मैं बेहोश होकर गिर पडी। मैं भी आपकी तरह दुःखी हूँ।

अब श्रीकृष्ण कहां मिलेंगे! उसे वापस कैसे प्राप्त करें! मैं उनके बिना जीवित नही रह पाऊंगी।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132